राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 46
शाकूरा का चक्रव्यूह
नागराज
Anupam
Vinod
इस विशेषांक के साथ
आकर्षक स्टीकर
मुफ्त
amaan.cooldude18

शाकूरा का चक्रव्यूह
लेखक:
अनुपम सिन्हा, हनीफ अजहर
चित्रांकन:
अनुपम सिन्हा, विनोद कुमार
सम्पादक:
मनीष गुप्ता
चले आओ SSSS चले आओ SSS
चले आओ SSS चले आओ SS चले आओ SS
ओह! नहीं...
नहीं...

नहीं !
और मस्तिष्क में मौजूद हलचल-
फिर... फिर वही सपना... जिसने मेरी रातों की नींद और दिन का चैन हराम कर रखा है। उफ... आखिर कौन है वो स्त्री जो अत्याचार के डर से भागती फिर रही है... और कौन हैं उस पर अत्याचार करने वाले ?
चीख मारकर एक झटके से उठ खड़े हुए नागराज के चेहरे पर मौजूद था, पसीने का तूफान-
और मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं इस स्त्री को जानता हूं ? जबकि मैंने इसको अपनी याददाश्त में कभी भी नहीं देखा !
और सिर्फ यही नहीं, मुझे वे मंदिरों वाले सारे दृश्य भी जाने-पहचाने लगते हैं।
और उन मंदिरों को भी मैंने आज तक नहीं देखा !
इस सपने के विषय में जानने के लिए मुझे द्वीप के नागर्प दितों से पूछना होगा।
और यह काम कल सुबह ही हो सकता है, आधी रात को किसी को परेशान करना उचित नहीं।
एक ही बात हो सकती है कि ये सारे दृश्य मुझे किसी भूली हुई घटना की याद दिला रहे हैं।
मेरा इन सबसे कोई न कोई संबंध है।
लेकिन क्या है वह संबंध ? यह मुझे जानना होगा, वरना यह सपना पिछले कई दिनों की भांति आगे भी परेशान किए रखेगा।
नागराज का सोचा पूरा ना हो सका-

क्योंकि अगले दिन की सुबह अपने साथ एक विस्फोटक सूचना लेकर आई—
गजब हो गया नागसम्राट! गजब हो गया !
क्या हुआ शूलकेट ?
लंगारा जाति के सभी सर्प एक विशाल सेना के रूप में द्वीप के रणक्षेत्र में उपस्थित हैं। और हमें युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। हमारे योद्धा भी रणक्षेत्र में पहुंच गए हैं। आदेश दीजिए कि हम क्या करें ?
आदेश देने के स्थान पर नागराज रण-क्षेत्र की तरफ ही भाग खड़ा हुआ—
आओ मेरे साथ!
ये लंगारा जाति के सर्प आखिर चाहते क्या हैं ?
रणक्षेत्र में पहुंचकर नागराज को अपने सवालों का जवाब मिल गया—
विसर्पी की शादी तुमसे नहीं हो सकती नागराज, अगर तुम्हें हमारी मांग स्वीकार नहीं है तो एक भीषण युद्ध की तैयारी कर लो।
नागराज के कुछ बोलने से पहले ही नागार्जुन बोल उठा—
युद्ध से किसे डरा रहा है दुष्ट लंगारा, हमें तो सिर्फ नागसम्राट के आदेश की प्रतीक्षा है, फिर देखना कैसे तुम्हारी और तुम्हारे दुष्ट साथियों की लाशें गिराते हैं।
कौन किसकी लाशें गिराएगा ये तो समय ही बताएगा नागार्जुन!
अपना निर्णय सुनाओ नागराज! हमारे हाथों में थमे अस्त्र लहू से होली खेलने को तरस रहे हैं।
लंगारा जाति के सर्प अत्यन्त घातक युद्धक हैं, युद्ध के हर दांव-पेंच में पूरी तरह निपुण...
... बाकी जाति के सर्प शायद ही इनका मुकाबला कर सकें।

और ऐसा हो भी जाए तो क्या द्वीप की जमीन तो खून से रंगेगी ही। प्रेम-भाव से रहने वाले सभी जाति के सर्पों में द्वेष-भाव तो बढ़ेगा ही!
और ये सब मेरी वजह से होगा। उफ... कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं?
... मुझे इस विषय में विसर्पी और पुजारी बाबा से बात करनी होगी, तभी मैं कोई निर्णय ले सकता हूं।
काफी सोच-विचार करके नागराज बोला—
मुझे एक दिन सोचने का समय दो मित्रों, मैं कल सुबह तुम्हें अपना निर्णय सुनाऊंगा।
ठीक है नागराज! हम तुम्हें एक दिन का समय देते हैं, लेकिन इतना ध्यान रहे कि अगर निर्णय हमारे विरुद्ध हुआ तो इस द्वीप पर सर्पमानवों के खून की नदियां बहती नजर आएंगी!
इतना कहकर लंगारा अपने जाति के सर्पों के साथ वहां से चला गया—
बाद में—
य... ये आप क्या कह रहे हैं नागश्रेष्ठ?
इस खुरेंजी टकराव को टालने का अब तो मात्र एक ही हल है पुजारी बाबा कि फिलहाल मेरी और विसर्पी की शादी ना हो।
ऐसा नहीं हो सकता?
समझने का प्रयास करो, विसर्पी! हमारे इस संबंध से नागद्वीप पर भीषण आंतरिक युद्ध हो सकते हैं। और कई नागों की जान जा सकती हैं।
हम अपने संबंध बनाने की खुशी की खातिर, अनगिनत प्राणों की बलि नहीं ले सकते!
अभी भाग्य को हमारा विवाह मंजूर नहीं है। लेकिन मुझे विश्वास है कि एक न एक दिन भाग्य हमारा साथ अवश्य देगा!
हम उस दिन की प्रतीक्षा करेंगे विसर्पी!
नागराज के तर्कों से विसर्पी और पुजारी बाबा को सहमत होना ही पड़ा—

अगले दिन नागराज का निर्णय सुन लंगारा जाति का हर नाग झूम-झूम उठा—
हम जीत गए!
तुमने हमारे पक्ष में अपना निर्णय देकर भीषण रक्त-पात होने से बचा लिया नागसम्राट! अब हमारी एक छोटी सी शर्त और है।
एक और शर्त?
हां, और वह यह कि तुम्हें यह निर्णय लेना होगा कि या तो तुम यहां रहो या फिर बाहरी दुनिया में।
ऐसा क्यों?
तुम्हारा उस उड़ती चिड़िया से यहां आना और यहां से जाना द्वीप की सुरक्षा के हित में नहीं है। तुम्हारे कारण कई बाहरी शक्तियों को इस द्वीप के रहस्य का पता चल सकता है, और वह शक्ति इस द्वीप पर आक्रमण करके सब कुछ तहस-नहस कर सकती है।
द्वीप का हित चाहने वालों को भी लंगारा की वह बात उचित लगी—
लंगारा ठीक कह रहा है नागश्रेष्ठ!
आपको यह अतिमहत्वपूर्ण निर्णय लेना ही होगा!
अगर कोई चाहे तो मेरी लाख सावधानियों के बावजूद भी मेरा पीछा करते हुए यहां पहुंच सकता है। लेकिन इस समस्या का हल समझ में नहीं आ रहा है।
कैसे छोड़ दूं उस बाहरी दुनिया को। जिसमें मौजूद हजारों लाखों अपराधियों को नेस्तनाबूद करने का बीड़ा मैंने उठाया है।
नागराज अजीब पसोपेश में फंस गया—
वैसे तो मैं यहां आते समय काफी सावधानी बरतता हूं, लेकिन फिर भी लंगारा की बात को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। आजकल रडार प्रवृत्ति काफी विकसित हो गई है।

...और कैसे त्याग दूं इस नागमणि द्वीप को, जिसका मैं राजा हूं। और राजा का धर्म होता है अपनी प्रजा की रक्षा करना।
कर्त्तव्य और धर्म की इस लड़ाई में...
...आखिर जीत हुई धर्म की। खड़े होकर नागराज ने अपना निर्णय सुना दिया—
मैं घोषणा करता हूं कि अब सदैव इसी द्वीप पर रहकर आपकी सेवा में रत रहूंगा...
नागराज के इस निर्णय पर जय-जयकार कर उठा द्वीप का एक-एक नागमानव—
नागसम्राट नागराज की जय...
सम्राट की उड़ने वाली यांत्रिक चिड़िया को नष्ट कर दिया जाए। अब सम्राट को इसकी कतई आवश्यकता नहीं।
तोड़ा जाने लगा नागराज का हैलीकॉप्टर—
तभी एक नागमानव की गलती से ऑन हो गया हैलीकॉप्टर का रेडियो और उससे यह सन्देश प्रसारित होने लगा—
नागराज जहां भी हो, इस सूचना को सुनकर कृपया तुरन्त बंबई पहुंचें... उसके कारण हजारों की जान खतरे में है। नागराज जहां भी हो...
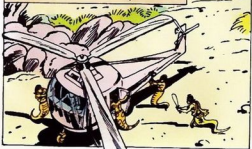
... इस सूचना को सुनकर बंबई पहुंचे उसके कारण हजारों की जान खतरे में है।
?
अब नागराज चुप न रह सका—
हजारों इंसानों की जान खतरे में है, विसर्पी! मुझे जाना होगा!
नहीं नागराज, तुम यहां रहने का वचन दे चुके हो।
मैं नहीं गया तो हजारों जिन्दगियों का क्या होगा?
क्योंकि मैं सैकड़ों मासूम जिन्दगियों की मृत्यु का इल्जाम अपने सिर पर लेकर नहीं जी सकता।
अगले ही पल—
ठहरो! इसे तोड़ना बन्द करो!
अचानक नागराज का चेहरा दृढ़ होता चला गया—
मैं यहां का राजा हूं। और प्रजा की रक्षा करना मेरा धर्म है। लेकिन प्रजा की रक्षा दूसरे तरीके से भी करी जा सकती है। हां... मुझे वह दूसरा तरीका अपनाना होगा।
नागराज की उस घोषणा ने सभी को सकते की हालत में पहुंचा दिया—
मैं नागराज अपनी इच्छा से इस द्वीप के सम्राट पद को छोड़ता हूं। इसी के साथ मैं सदा के लिए इस द्वीप से चले जाने की घोषणा करता हूं।
नहीं नागराज नहीं... ऐसा मत करो। ऐसा मत करो नागराज!

ऐसा करना बहुत जरूरी है, विसर्पी! क्योंकि इस द्वीप के निवासी कई चमत्कारिक शक्तियों के धारक हैं। वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकने में सक्षम हैं।...
...जबकि बाहरी दुनिया में ऐसे अनगिनत प्राणी हैं, जो अपनी रक्षा तक नहीं कर सकते। और उन पर अत्याचार करने वाले क्रूर और शक्तिशाली प्राणी भी वहां पर कई हैं।
उन क्रूर प्राणियों से मुकाबला करने के लिए, बाहरी दुनिया वालों को मेरी सख्त जरूरत है।
नागराज के फैसले का कुछ और ही मतलब निकाला नागमानवों ने—
आपने हमारा सम्राट होकर हमें छोड़ने का निर्णय लेकर अच्छा नहीं किया...
...इसलिए जाते-जाते एक निर्णय आप हमारा भी सुन जाइए...
...आज के बाद आप हमारे लिए अजनबी हैं...
...अगर आपने फिर कभी इस द्वीप पर प्रवेश करने का प्रयत्न किया तो आपको मौत के घाट उतार दिया जाएगा।
उफ! ये सब मुझे गलत समझ रहे हैं। लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं...
...मुझे हर हाल में यहां से जाना है।
तभी-
अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता नागराज!
नागानन्द! तुम मेरा साथ छोड़ रहे हो?
हां नागराज! क्योंकि मैं इसी द्वीप पर अपने भाई-बन्धुओं के साथ रहना चाहता हूं।
तुम जा सकते हो, नागराज!
उफ!
नागराज को ना रुकना था सो ना रुका—
अलविदा, विसर्पी! अलविदा प्यारे द्वीप-वासियो!

तुमसे सदा के लिए दूर जरूर हो रहा हूं, लेकिन मैं इतना निष्ठुर नहीं हूं कि तुम्हारी खोज-खबर भी ना रखूं। तभी मैंने जानबूझकर अपने सेवक नागानन्द को द्वीप पर ही रहने का गुप्त आदेश दिया है।...
एक बार फिर रेडियो से फ्लैश होती सूचना ने नागराज का ध्यान अपनी तरफ खींचा—
हजारों की जान खतरे में है। नागराज तुरन्त बंबई पहुंचे...
कौन है वो, जिसने हजारों जानों को सिर्फ मेरे लिए संकट में डाल रखा है... और कैसे?
...ताकि वह समय-समय पर मेरे पास द्वीप के अच्छे-बुरे की सूचना पहुंचाता रहे।
संकट—
अद्भुत संकट था वह, जिसमें फंसी हुई थीं हजारों जानें—
समुद्र बिल्कुल शान्त है। और इस शहर के आसपास कोई नदी भी नहीं है फिर ये पानी बाढ़ का रूप लेकर एकाएक कहां से आ गया?
ONIDA
DYNA
CANTER
Classic
मुझे लोगों को इस बाढ़ से बचाना होगा।

नागराज तुरन्त ही अपनी नागसेना के बल पर लोगों को बचाने में जुट गया—
क्या यही है वह संकट जिसके लिए मुझे यहां बुलाया गया है।
जल्द ही एक प्रत्यक्षदर्शी से नागराज को पता चली वह आश्चर्यजनक बात—
अपुन उस समय लिरिल साबुन के उस होर्डिंग के पास खड़ा हुआ था, अचानक ना जाने क्या हुआ कि...
होर्डिंग का झरना सचमुच का झरना बन गया और...
Liril
SOAP
...और अचानक यहां बाढ़ आ गई।
... उसके सवालों का जवाब होटल ओबराय डीलक्स की छत पर मौजूद था—
कमाल है, होर्डिंग का झरना एकाएक जीवित हो उठा, ये तो ऐसा लगता है, जैसे किसी ने कोई परी कथा सुना दी हो। लेकिन ये हुआ कैसे?
तुम्हें बुलाने का मेरा मकसद पूरा हो गया नागराज, अब मुझे यह पानी का खेल-खेलने की कोई जरूरत नहीं है... अब तो मैं तुमसे मौत का खेल खेलूंगा।
आश्चर्य में डूबा नागराज नहीं जानता था कि...

अगले ही क्षण नागराज के साथ वहां खड़ा हर शख्स भौंचक्का रह गया—
Liril
अरे, बाढ़ का सारा पानी तेजी से उस होर्डिंग में समाता जा रहा है।
हे मेरे भगवान! ये क्या हो रहा है?
कुछ ही क्षण पहले जहां पानी बाढ़ का रूप धारण किए हुए था, अब वहां उसका नामो-निशान न था—
अरे! यह क्या?
जो लपलपाती हुई 'कैंटर ट्रक' के विशाल होर्डिंग से टकराई, और—
घोर आश्चर्यजनक घटना। बिल्कुल ऐसी जैसे मैं कोई सपना देख रहा हूं।
CANTER
नागराज बुरी तरह चौंका और उसके चौंकने का कारण थीं वह पतली सी किरणें—
एक और आश्चर्यजनक दृश्य प्रस्तुत करती चली गई—
उफ्! वह केंटर ट्रक जिन्दा हो गया!
घर्रर्रर्र

बला की फुर्ती का प्रदर्शन करके नागराज 'केंटर ट्रक' की चपेट में आने से बचा—
धड़ाम
अब नागराज को सारा माजरा समझते देर न लगी—
ONIDA
ये न कोई परीकथा है और न सपना, ये तो जादू का कमाल है। कोई अपने जादू से मेरी जान लेने पर उतारू है।
तो—
Hotel OBERAI
किसी की तलाश में घूमी नागराज की निगाहें—
होटल ओबेराय के टॉप पर खड़ा वह मरियल सा व्यक्ति यह सब जादू कर रहा है। लेकिन वह है कौन?
नागनाथ मुझे उसका पता लाकर देगा।
नागराज ने नागनाथ 'दुश्मन' की तरफ भेज दिया—
इधर दुश्मन—
ट्रक की चपेट में आने से तू किसी तरह बच गया नागराज और ट्रक दीवार से टकराकर नष्ट हो गया।
कोई बात नहीं, अब मैंने अपने जादू से तेरे लिए एक ऐसी मौत को जगाने की सोच ली है, जो तुझे मारकर ही मरेगी।
उससे पहले तू लाख कोशिशों के बाद भी उसे नहीं मार सकता।
उसकी आंखों से लपलपाई कई रंग-बिरंगी किरणें...
...जो हाथ में थमे उस विचित्र प्रिज्म से होकर गुजरीं—

और...
ONIDA
... जो टकराई 'ओनिडा' के नर्क के शैतान से तो...
ENVIOUS MAY GO TO HELL
...तो–
ONIDA
हा हा हा हा हा हा हा
मुसीबत नहीं रे नागराज, मौत बोल तू मुझे!
उफ़!
ओह! एक और नई मुसीबत!
... अपने सर्पसैनिकों की मदद से!
विद्युत से लहराकर शैतान से जा लिपटे सैकड़ों सर्प-सैनिक –
अपनी मौत बोल! हाहाहा!
तड़ाक
उफ़! इस शैतान को रोकना होगा...
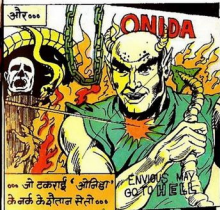
लेकिन दूसरे ही क्षण शैतान ने एक को भी अपने शरीर पर नहीं रहने दिया—
नर्क के शैतान को तेरे नाग नहीं रोक पाएंगे, नागराज...
हा हा हा।
ताड़
और ना ही तुझे मरने से बचा पाएंगे।
इस बार नागराज ने नागरस्सी पर लहराकर घातक विष फुंकार उगल दी—
इससे तेरी हड्डियां तक गल जाएंगी दुष्ट!
ओह! इसे तो कुछ भी नहीं हुआ!
ही ही ही! बच्चों की तरह फूकें क्यों मार रहा है नागराज, मैं तेरी फूकों से उड़ने वाला नहीं, इसलिए ये बचकानी हरकतें छोड़!
और मर्दों की तरह लड़!
आऽऽहं
इस नरक के शैतान को खत्म करने का तो अब एक ही तरीका है, और वो है...
... अपने घातक विष को इसकी नसों में पहुंचाना। अब तक मेरा यह विष सैकड़ों को मोम की की भांति पिघलाता आया है।
शैतान के मांस में अपने दांत गड़ा दिए नागराज ने—

तभी नागराज के मस्तिष्क से नागनाथ की मस्तिष्क संदेश ग्राहक तरंगें आ टकराईं—

इस शैतान को किसी और जादू द्वारा जिन्दा किया गया है! और इसको अगर मारा जा सकता है, तो सिर्फ जादू के द्वारा।

ONIDA

तुम्हारा सोचना सही है, तुम पर किरणों का हमला सामने वाली बहुमंजिला इमारत पर खड़े व्यक्ति ने ही किया है नागराज, अब बताओ मेरे लिए क्या आदेश है?

अगर मैं उसी जादुई किरण द्वारा 'ओनिडा' की होर्डिंग पर बनी 'नर्क की आग' को भी जिन्दा कर सकूं...

...तो वह 'नर्क की आग' इस नर्क के शैतान को खत्म कर सकती है।

तुरन्त ही— नागनाथ! इस समय तुम जिस आदमी के पास हो, उससे लिपट जाओ और उसे इस तरह किरणें छोड़ने के लिए मजबूर कर दो कि वे सीधी नर्क की आग वाले बोर्ड पर आ गिरें। कर सकोगे ये काम?

क्यों नहीं?
और—
अचानक हुए उस हमले से वह शख्स बुरी तरह हड़बड़ा गया—
अंजाने में ही उसकी आंखों से किरणों का तूफान निकला—
और 'प्रिज़्म' के अन्दर से होता हुआ, नीचे 'ओनिडा' की होर्डिंग की तरफ बढ़ चला—
साथ ही साथ नागनाथ ने भी उसके हाथ को एक तेज झटका दिया—
लेकिन नागनाथ का प्रयास सफल हो चुका था—
गिरते हुए प्रिज़्म से होकर गुजरी किरणों ने होर्डिंग की नरकाग्नि को असली बनाकर धधका दिया था—
और प्रिज़्म उन रहस्यमय हाथों से छूट गया—
नागनाथ ने अपने काम को बखूबी अंजाम दिया है, और अब मुझे अपने काम का अंजाम देना है।

इस शैतान को धधकती हुई नरकाग्नि में फेंकना।
दूसरे ही पल शैतान की दर्दनाक चीखों से वातावरण गूंज उठा—
ईयाTTTTT
इधर प्रिज्म नीचे गिरकर एक तेज आवाज से फूटा—
धनाक
उधर—
ONIDA
GO TO HELL
ओह! सब कुछ गायब! सभी कुछ पहले जैसा सामान्य!
नागराज की तरह ही...
... जादू करने वाला भी यह बात समझ चुका था—
प्रिज्म के टूटने के साथ ही मेरा जादू समाप्त हो गया। नागराज को खत्म करने का मेरा प्लान चौपट हो गया। मुझे यहां से भागना होगा।
अब मेरा भी यहां ठहरना बेकार होगा।
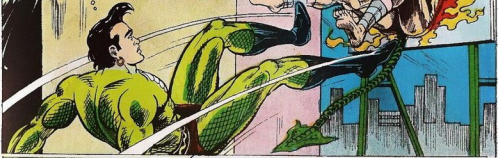
तुरन्त ही—
अब मुझे नागराज के लिए दूसरे व्यूह की रचना करनी होगी...
... वर्ना यह जादूगर शाकूरा के लिए शर्म से डूब मरने वाली बात हो जाएगी!
HOTEL OBER
मुझे उसे खत्म करना ही होगा...
जी, हां! जादूगर शाकूरा ही था वह, उस मरियल व्यक्ति के रूप में—
इधर नागराज ने नागनाथ को गले से लगा लिया—
धन्यवाद नागनाथ!
मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है, नागराज!
फिर नागनाथ वापस नागराज के शरीर में समा गया—
नागराज सोच में डूब गया—
कौन था वह जादूगर, जो अपनी जादूगरी के जाल में फंसाकर मुझे मारना चाहता था...
...और उसका मकसद क्या था?
बहुत सोचने के बाद भी जब नागराज कुछ ना समझ पाया...
... तो उसने अपना ध्यान दूसरी 'समस्या' की तरफ लगाया—
मुझे यहां किसी पुरातत्ववेत्ता से मिलना होगा, ताकि मैं अपने सपने में दिखाई देने वाले उन मंदिरों के बारे में कुछ जान सकूं जो मुझे काफी परेशान किए हुए हैं।
कुछ देर बाद नागराज एक टेलीफोन बूथ में मौजूद था—
TELEPHONE BOOTH
इतने बड़े शहर में अपने मतलब के आदमी को ढूंढने के लिए औरों की तरह मुझे भी टेलीफोन डायरेक्ट्री के येलो पेजों को देखना होगा।
जल्द ही—
मिस मालती, 13, कोलाबा रोड, बंबई-400058.
शायद मिस मालती मेरी समस्या का हल कर सकती है।

गराज एक टैक्सी में बैठकर पुरातत्ववेत्ता मानवी के घर की तरफ चल पड़ा—
RAJ COMIC
सी दौरान एक अंजान और रहस्यमय थान पर—
बड़े शर्म की बात है कि आपका बहुत सोचा-समझा प्लान धराशायी होकर रह गया। आपकी जादू-भरी लाख कोशिशों के बाद भी आप नागराज को खत्म करने में सफल नहीं हो पाए..
श्रीमान दूगर शाकूरा!
तुम अपना दिव्यशक्तियों से भरा खजाना तैयार रखना। नागराज मेरे हाथ से मरेगा, हर हाल में मरेगा। शाकूरा के चक्रव्यूह से वह नहीं बच सकता।
नागपाशा कुछ बोलता...
... उससे पहले ही वह आवाज़ गूंजी—
महामहिम नागपाशा, आपके बुलाए पर मिसकिलर पधार चुकी हैं।
मैं मानता हूं कि मेरा पहला प्रयास असफल हुआ है श्रीमान नागपाशा, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मैं हार गया...
...आपने मुझे जो समय दिया था, उसमें अभी एक दिन बाकी है। और इतना समय मेरे लिए बहुत है नागराज जैसे कीड़े को खत्म करने के लिए।
ओह! जुर्म की दुनिया की एकमात्र महारानी मिस किलर... उन्हें आदर सहित अन्दर भेज दो।

मिस किलर—
देरी से पहुंचने के लिए क्षमा चाहती हूं, श्रीमान नागपाशा! लेकिन क्या करूं, जिस समय आपका मैसेज पहुंचा उस समय मैं अपने हैडक्वार्टर में मौजूद नहीं थी।
कोई बात नहीं मिस किलर! आप अपना आसन ग्रहण कीजिए।

मिस किलर के बैठ जाने के बाद—
वैसे तो मैंने यहां मौजूद हर मेहम को अपना उद्देश्य बता दिया है, चूंकि आप अभी-अभी आई हैं मिस किलर! इसलिए मैं आपको भी उन अवगत करा देना चाहता हूं।

मेरा उद्देश्य है विश्व आतंकवाद का खात्मा करने की सौगंध खाने वाले नागराज का खात्मा करना।
इसलिए मैंने आप सबको इकट्ठा किया है, क्योंकि आप सभी को नागराज ने किसी न किसी मुकाम पर गहरी शिकस्त दी है। मैं चाहता हूं कि नागराज आपमें से ही किसी के हाथों से खत्म हो।
इस तरह नागराज को खत्म करने वालों को अंडरवर्ल्ड की दुनिया से वाह-वाही तो मिलेगी ही...
साथ ही साथ मेरी तरफ से इनाम स्वरूप मिलेगा बेशुमार दौलत और सैकड़ों दिव्यशक्तियों से भरा एक विशाल खजाना।
नागपाशा के चुप होते ही शंकित हो उठी मिस किलर बोल उठी—
नागराज के हत्यारे को खजाना देने की आपकी बात यह साबित करती है नागपाशा कि आप नागराज को सिर्फ आतंकवाद के दुश्मन को खत्म करने के लिए नहीं, किसी और उद्देश्य के लिए भी मारना चाहते हो!
आप गलत समझ रही हैं मिस किलर! जरा सोचिए जो विश्व के हर अपराधी के दुश्मन का हत्यारा होगा, क्या उसको कोई शानदार इनाम नहीं मिलना चाहिए। खैर छोड़िए इस बात को।

गाइस। मैं आपको पने सभी मेहमानों से परिचित करवा दूं।
••• नागपाशा मिस किलर से बाकी मेहमानों का परिचय कराने में जुट गया—
मैं नगीना। नागतांत्रिका।
मैं प्रोफेसर नागमणि••• नागराज और नागदंत जैसे विलक्षण मानवों का जन्मदाता।
बेहद खूबसूरती से बात टालकर•••
नागदंत। नागराज जैसा, मगर नागराज का पक्का दुश्मन।
जादूगर शाकूरा! दुनिया मुझे बौना शैतान के नाम से जानती है।

चूं-चूं!
विश्व मार्शल आर्ट आर्गेनाइजेशन का मुख्य चीफ। मगर असल में आपमें से ही एक।
मुझे जुगेतो कहते हैं। पूरे अमेरिका में मेरे हुक्म को राष्ट्रपति के हुक्म से बढ़कर माना जाता है।
फेसलैस!
इस बहुरूपी दुनिया में कब कैसा रूप धर लूं, मैं खुद नहीं जानता।
और मैं नागपाशा! आपका मेजबान, फिलहाल मेरा इतना ही परिचय काफी है।
अजीब हस्ती है नागपाशा!
अपने बारे में सब-कुछ छिपा गया।

अभी परिचय पूरी तरह समाप्त भी नहीं हुआ था कि जादूगर शाकूरा बोल उठा—
आप सब यहां परिचय में व्यस्त रहिए, मैं चलता हूं। क्योंकि मेरे पास समय कम है और मुझे नागराज को खत्म करना है।

आंखों में बदले का ज्वालामुखी लिए जादूगर शाकूरा किले से बाहर निकला—
बंबई बहुत बड़ा शहर है। लेकिन मैं जादू के बल पर नागराज को बहुत जल्द ढूंढ निकालूंगा।

इधर नागराज मशहूर पुरातत्ववेत्ता मानवी के घर पहुंच चुका था—
जो उसे दरवाजे पर देखकर ऐसे चौंकी मानो वह नागराज नहीं ताजमहल हो—

नागराज! विश्व अपराध का दुश्मन नागराज। सुपरहीरो नागराज! मेरे... मेरे दरवाजे पर! उफ... उफ! कहीं मैं खुशी से पागल ना हो जाऊं!
क्या आप मुझे अन्दर आने के लिए नहीं कहेंगी मिस मानवी!
हां... हां क्यों नहीं, आओ अन्दर आओ!

कुछ देर बाद अपने से पूरी तरह घुल-मिल चुकी मानवी को नागराज सारी बात बता चुका था—

ओह! तो यह है तुम्हारी समस्या। तुम एक सपने को इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हो?

ये एक आम सपना भी तो हो सकता है, जो नींद में आमतौर से हर आदमी को दिखाई देता है।
नहीं मानवी! मुझे यह आम सपना नहीं लगता!...
...क्योंकि मुझे हमेशा यह आभास होता है कि सपने में दिखाई देने वाले दृश्यों का, मुझसे नजदीकी संबंध है।

अगर तुमको ऐसा लगता है नागराज, तो शायद तुम्हारा सोचना ही सही होगा।
लेकिन जब तक मेरे पास तुम्हारे सपने में दिखाई देने वाले मंदिर का कोई 'क्लू' नहीं होगा, तब तक मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगी।
'क्लू' तो मैं तुम्हें आसानी से दे सकता हूं मानवी, क्योंकि...

... वह मंदिर मेरे दिलो-दिमाग के कागजों पर प्रिन्ट होकर रह गया है।
नागराज ने अपने सपने में दिखाई देने वाले मंदिर का स्केच बनाकर...
... मानवी को सौंप दिया–
हुम्म! इससे ज्यादा तो कुछ पता नहीं चलता। लेकिन फिर भी मैं इस स्केच के बल पर तुम्हारे सपने के मंदिर को ढूंढ निकालने में कोई कसर नहीं उठा रखूंगी।

जल्द ही–
तुम्हारे द्वारा दिए गए मंदिरों के रफ स्केच का अध्ययन कर मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि तुम्हारे सपने में आने वाले मंदिरों की रूप-रेखा भारत में स्थित दो मंदिरों से मिलती है।

जिसमें पहला है ऐलिफेंटा द्वीप का मुख्य गुफा मंदिर ...
... दूसरा है राजस्थान के कटच क्षेत्र के रेगिस्तान में बना भैरों मंदिर...
ओह! यानी अपने सपने वाले मंदिर को ढूंढने के लिए मुझे लगभग पूरे भारत का भ्रमण करना होगा।

बिल्कुल।
ठीक है... मैं शुरूआत ऐलिफेंटा से ही करता हूं, क्योंकि वही यहां से सबसे पास है।
फिर नागराज वहां नहीं रुका–

ल्द ही नागराज गेट वे ऑफ इंडिया से ऐलिफेंटा तक
लने वाली लांच पर सवार था—
ऐलिफेंटा यहां से दस किलोमीटर दूर है।
यह लांच जल्द ही मुझे वहां पहुंचा देगी।
लगभग आधे घंटे बाद—
ऐलिफेंटा द्वीप के ये गुफा मंदिर हजारों मनुष्य शिल्पियों ने विश्वास और श्रद्धा तथा हाथों में कौशल लेकर बड़े धीरज और मेहनत के साथ कोंकण के मौर्या के शासन-काल में बनाए हैं। जो लगभग 1300 वर्ष पुरानी बात है।
पहले ये द्वीप धारापुरी और श्रीपुरी के नाम से जाना जाता था। जब पुर्तगाली पहले-पहल यहां पहुंचे तो उन्होंने यहां मौजूद पाषाण के एक बड़े हाथी को देखकर इसका नाम ऐलिफेंटा रख दिया।
नागराज ऐलिफेंटा के मुख्य गुफा मंदिर में पहुंचा—
ऐलीफेंटा के सात गुफा मंदिरों में यह प्रमुख गुफा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।
इसमें भगवान शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यही मेरे सपनों का मंदिर हो सकता है!
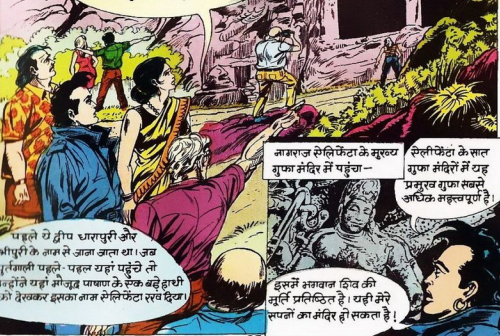
काफी सोच-विचार और आस-पास के स्थान का निरीक्षण करने के बाद नागराज को निराशा ही हुई-
यह वह मंदिर नहीं है, जो मुझे सपनों में दिखाई देता है।
हालांकि इस मंदिर की लोकेशन काफी हद तक उस मंदिर से मिलती है...
... मुझे यहां के आस-पास के और मंदिरों का भी निरीक्षण करना होगा।
नागराज ने एक गाइड को रोककर उससे पूछा-
यहां आस-पास और भी कोई मंदिर है?
हां! पास ही कुछ दूरी पर एक छोटे से टापू पर एक मंदिर और है...
... लेकिन उस तरफ पर्यटक आना पसंद नहीं करते... आप क्यों पूछ रहे हैं?
कोई खास बात नहीं, बस यूं ही।
मुझे उस मंदिर को देखना होगा।
कुछ ही देर बाद नागराज उस छोटे टापू पर स्थित सुनसान मंदिर में था-
यह भी मेरे सपनों का मंदिर नहीं है।

अब मुझे कटच के रेगिस्तान में स्थित भैरो मंदिर जाना होगा!
अरे! ये आवाज़ कैसी?
उस आवाज़ पर पीछे पलटे नागराज को अपनी आंखों पर कतई विश्वास नहीं हुआ—
सामने का दृश्य विश्वास करने योग्य था भी नहीं—
ओह! समुद्री घोड़ा अपनी पूंछ पर चलकर मेरी तरफ बढ़ रहा है। ये क्या जादू है?
जादू! हां जादू ही है ये... और ये जादू मेरी जान लेने के लिए ही किया गया है।
नागराज का सोचना कितना सही था, ये उसे दूसरे क्षण ही पता चल गया—
कड़ाक
समुद्री घोड़े का अगला वार भी घातक निकला—
तड़
आऽऽऽह! अब तो इसके हमले का जवाब देना ही होगा।

समुद्री घोड़े के अगले वार ने नागराज को दूर उछाल फेंका—
घड़ाक
मुझे अपने बचाव के लिए किसी हथियार की जरूरत है...
... और उसके लिए ये पत्थर एकदम उपयुक्त रहेगा।
जिसे समुद्री घोड़े ने क्रिकेट के कुशल खिलाड़ी की भांति अपने मुंह में लपका, और...
कड़च
ओह! मोटे पत्थर को हाजमोला की तरह चबा गया कमबख्त!
अब मुझे इस्तेमाल करनी होगी नागरस्सी।
नागराज ने उछाल फेंका वह मोटा पत्थर—
जो उसे खंभे के साथ मजबूती से बांध देगी।
तेजी से नागरस्सी ने समुद्री घोड़े को खंभे से बांध दिया—
लेकिन सिर्फ एक पल के लिए—
क्योंकि अगले ही पल...
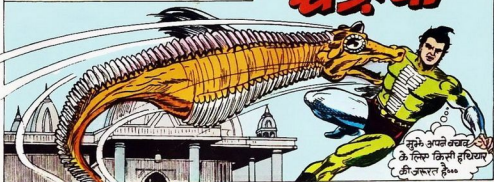
नागराज ने विष फुंकार छोड़ी–
लेकिन उससे पहले ही समुद्री घोड़ा फुंकार के रास्ते से अलग हट चुका था–
वह न केवल विष फुंकार से बचा...
... बल्कि उसने नागराज को दिन में तारे भी दिखा दिए–
कुछ पलों के लिए नागराज अपने होशो-हवास खो बैठा–
और साथ ही यह भूल गया कि इस समय वह उस भयानक समुद्री घोड़े का शिकार है, जो तेजी से उसकी तरफ बढ़ रहा था–
सांय
नागराज को अपने मददगार के रूप में नजर आई वह रोंगटे खड़े कर देने वाली हस्ती–
लेकिन उसी पल–
एक तेज वार से वह भी अपने होशो-हवास खो बैठा–
तड़ाक
उफ! इतनी अनोखी वेशभूषा। हो न हो, यही वो जादूगरनी है जो मुझे अपने जादू से मारना चाहती है।
मुझे सावधान रहना होगा।

नागराज के मस्तिष्क में घुमड़ते ख्यालों को उस हस्ती ने मानो उसके चेहरे से पढ़ लिया—
मैं जानती हूं कि तुम मेरे बारे में क्या सोच रहे हो ••• लेकिन तुम्हारा ऐसा सोचना गलत है। मैं वास्तव में तुम्हारी मददगार हूं।
कौन हो तुम? और यहां अचानक कैसे आई?
मेरा नाम कपाल कुंडला है। मैं इसी मंदिर के तहखाने में अपनी तंत्र साधना करती हूं।
मेरे पुरखे इस मंदिर के पुजारी थे। उनसे ही मैंने तांत्रिक विद्या सीखी!
और अब यहीं रहकर मैं नई-नई तांत्रिक विद्याओं की साधना करती रहती हूं।
आज भी मैं अपने तंत्र कार्य में व्यस्त थी कि तभी मैंने ऊपर उठा-पटक की आवाज सुनी और सही समय पर तुम्हारी सहायता को आ पहुंची।
मैंने तुमको गलत समझा! उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं।
दरअसल मुझ पर कोई जादूगर, जादुई शक्तियों से हमला कर रहा है। मैं तुमको वही जादूगर समझने की भूल कर बैठा।
ध्यान में लीन कपाल कुंडला की आंखें बंद हो गईं—
तांत्रिक शक्तियां फैलने लगीं। और लगभग तुरन्त ही—
नागराज! वह जादूगर यहीं-कहीं आस-पास ही है। मगर अदृश्य रूप में•••
ओह! मैं अपने तंत्र-जाल से यह पता करने की कोशिश करती हूं कि वह जादूगर कौन है?
••• लेकिन मैं उसको अदृश्य नहीं रहने दूंगी। उसे मेरे सामने आना ही होगा।
लेकिन इससे पहले कि कपाल कुंडला अपनी तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग कर पाती •••
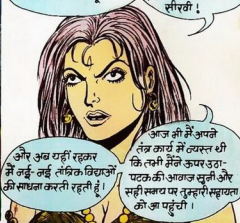
—उससे पहले ही सामने आ गया—
जादूगर शाकूरा!
तुम जिन्दा हो!
हां नागराज! मैं जिन्दा हूं। वैसे तुम मुझे बम के धमाकों के बीच मरने के लिए छोड़ जरूर गए थे लेकिन उस समय शायद तुम भूल गए थे कि मैं जादूगर शाकूरा हूं।
शाकूरा ग्रह का प्राणी विक्टार शाकूरा! और शाकूरा ग्रहवासी अमर होते हैं। तू समझता था कि वे मामूली से बम शाकूरा की जान ले सकते हैं। पर मैं तो हंसता हुआ उनके फटने का मजा ले रहा था।
पर तुझे, तेरी हरकत की सजा तो मुझको हर हाल में देनी ही थी—
उस दिन वहां से भागते हुए मैंने उठायी थी वह सौगन्ध—
नागराज! तू ज्यादा दिन तक मेरे हाथों से नहीं बच सकता। मैं तुझे समाप्त करके ही चैन से रहूंगा!
और आज... आज तुझे समाप्त करने का मुझे बहुत अच्छा अवसर मिला है नागराज!
आज तुझे मरने से कोई नहीं बचा पाएगा। ना तेरी शक्तियां और ना ये कपाल कुंडला, जिसकी तंत्र शक्तियां मेरे जादू के सामने बच्चों के खेल से ज्यादा कुछ नहीं।
ये तो तेरे साथ ही मरेगी!
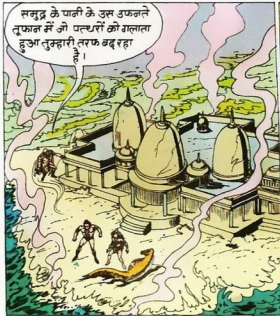
समुद्र के पानी के उस उफनते तूफान में जो पत्थरों को गलाता हुआ तुम्हारी तरफ बढ़ रहा है।
शाकूरा के जादू ने तो नागराज के रोंगटे खड़े कर डाले—
उफ! समुद्र का पानी चारों तरफ से तेजाब की मानिन्द सब-कुछ गलाता हुआ इस टापू को अपनी चपेट में लेता जा रहा है।
कुछ ही देर में यह टापू जलमग्न हो जाएगा। फिर कोई नहीं बचेगा, ना ये टापू ना ये मंदिर और ना हम!
मैं इन्हें अपनी तंत्र शक्तियों से रोकती हूं!
—समुद्र में उठते ज्वार को ना रोक सकीं—
कपाल कुंडला के हाथों से छूटी तंत्र-शक्तियां...
ओह! मेरी तांत्रिक-शक्तियां बेकार हो गईं।
हा हा हा... अपनी तंत्र-शक्तियों से मेरे जादू को रोकने की बजाय अपनी जान बचाने की सोच कपालकुंडला, मेरे जादू को तोड़ना तेरे वश की बात नहीं। हा हा हा!
ये ठीक कह रहा है नागराज...
भागो!
हा हा हा... मौत से भागकर कहां जाओगे तुम दोनों।
कपाल कुंडला के पीछे नागराज भी दौड़ पड़ा-

उफ़! इस समुद्री घोड़े ने तो फिर हम पर हमला कर दिया!
रुको मत, नागराज, भागते रहो। मैं इस समुद्री घोड़े का प्रबंध करती हूँ।
ब जैसे ही समुद्री घोड़ा उस किरणों दीवार से टकराया वैसे ही—
अपने जादू को विफल होता देखकर भी ठहाका ही लगाया उस बौने शैतान ने—
हा हा हा... शाकूरा का एक छोटा-सा जादू खत्म कर दिया तूने कपाल कुंडला। लेकिन इस पानी रूपी बड़े जादू का क्या करेगी जो अपने रास्ते की रुकावटें हटाता तुम्हारी तरफ बढ़ रहा है।
फट्टाक
किसी खून गुब्बारे की तरह फूटा—
इस जादू का भी कुछ करो कपाल कुंडला!
इसका कुछ नहीं हो सकता नागराज, भागते रहो!

कुछ देर के लिए नागराज और कपाल कुंडला जादूगर शाकूरा की नजरों से ओझल हो गए–
इस मोड़ को काटकर कहां बचेंगे!
जादूगर शाकूरा ने उनको जल्दी ही फिर जा पकड़ा–
... इधर तो पानी और भी तेजी से आ रहा है।
अब आगे भी मौत... और पीछे भी... अब कैसे बचोगे? हा हा हा!
दोनों तरफ से बहकर आते पानी के तेज रेले ने नागराज और कपाल कुंडला को अपनी चपेट में ले लिया–
और–
... और मोम की तरह पिघला डाला–
हा हा हा... देख लो दुनिया वालो। गौर से देख लो। खत्म हुआ तुम्हारा रहनुमा तुम्हारा रखवाला... विश्व को अपराध से मुक्त करने की कसमें खाने वाला नागराज। और इसका सारा श्रेय जाता है मुझे यानी जादूगर शाकूरा को...

हा हा हा ००० अब मैं चला नागपाशा को नागराज की मौत की खबर देने और उससे दिव्य खजाना हासिल करने। हा हा हा!
००० जल्दी ही नागपाशा के हैडक्वार्टर पर पहुंच गया—
लाओ, नागपाशा! अपना जादुई शक्तियों से भरा खजाना मेरे हवाले कर दो!
मैंने तुम्हारी शर्त पूरी कर दी है। नागराज खत्म हो गया है।
के लगाता जादूगर शाकूरा ०००
नागराज अभी तक जिंदा है जादूगर शाकूरा! आप उसे खत्म नहीं कर पाए।
और यह बात मेरे अलावा यहां बैठे और व्यक्ति भी जानते हैं।
ठ बोल रहे हो सब! तुम सबको से पता चला कि राज जिन्दा है?
हमने इस विशेष जादुई ग्लोब पर सब-कुछ अपनी आंखों से देखा है।
क्योंकि उन कुछ पलों में काफी कुछ घटित हो गया था—
नागराज! जल्दी से इस कुएं में छलांग लगा दो!
इसमें कूदने से क्या होगा। कुछ ही पलों में ये कुआं भी तेजाबी पानी से भर जाएगा और हम०००
ऐसा कुछ नहीं होगा नागराज! क्योंकि ये कुआं असल में कुआं नहीं, बल्कि एक चट्टानी सुरंग है जो हमें एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचा देगा।
ने देखा कि आपने नागराज और तांत्रिक कुंडला को अपने जादू के र भागने के लिए कर दिया०००
००० लेकिन भागते-भागते जब वे दोनों मोड़ मुड़े तो उन्होंने आपकी आंखों में धूल झोंक दी!

इस तरह हम बिना समुद्र का पानी छुए सुरक्षित किनारे पर पहुंच जाएंगे।
लेकिन शाकूरा हमको गायब देखकर तुरन्त समझ जाएगा कि हम कुएं के रास्ते से भागे हैं। और वह फिर कोई नया जादू चला देगा।
मेरी तंत्र शक्ति से बने। लेकिन अब तुम इन्हें देखने में अपना समय मत गंवाओ००० आओ।
ऐसा नहीं होगा नागराज! क्योंकि हम हर पल शाकूरा की आंखों के सामने रहेंगे।
ओह! हमारे प्रतिरूप!
दोनों ने तुरन्त ही कुएं में छलांग लगा दी-
००० और आप समझते रहे कि आपने अपने जादू के बल पर नागराज को समाप्त कर दिया।
आपका जादू चूक गया है श्रीमान शाकूरा। अब आपको हार मान लेनी चाहिए।
ओह! मैं इतना बड़ा धोखा खा गया। उफ!
ज्वालामुखी की तरह गरजा शाकूरा-
नहीं! नहीं! मेरा जादू नहीं चूका! मेरा जादू महान है। मैं महान हूं। नागराज मरेगा।
हर हाल में मरेगा!

नागराज–
मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं कपाल कुंडला ! जो तुमने अपनी तंत्र शक्तियों से मुझे जादूगर शाकूरा के जादू से बचाया।
कोई बात नहीं नागराज ! लेकिन मेरी समझ में अभी तक नहीं आया कि तुम उस मंदिर क्या करने पहुंचे थे ?
जवाब में नागराज ने अपने सपने का सारा वृतांत कपाल कुंडला को सुना दिया–
सब कुछ सुनकर–
ओह ! तो क्या यह मंदिर तुम्हारे सपनों का मंदिर निकला ?
नहीं ! इसीलिए अब मैं यहां से सीधा कटघ के रेगिस्तान में जाऊंगा।
मुझे उम्मीद है कि वहां स्थित भैरो मंदिर मेरे सपनों में आने वाला मंदिर हो सकता है।
जाओ नागराज ! लेकिन जादूगर शाकूरा से सावधान रहना ! देर-सवेर उसे तुम्हारे जीवित रहने की बात पता चल जाएगी।
लेकिन इस दौरान मैं भी चुप नहीं रहूंगी ! मैं अपनी तंत्र-शक्ति से शाकूरा के बारे में सब-कुछ जानने की कोशिश करूंगी, और फिर उससे छुटकारा पाने का कोई न कोई तरीका जरूर निकाल लूंगी।
विदा, कपाल कुंडला ! जीवन रहा तो फिर अवश्य मिलेंगे।
नागराज तुरन्त कटघ के लिए रवाना हो गया–
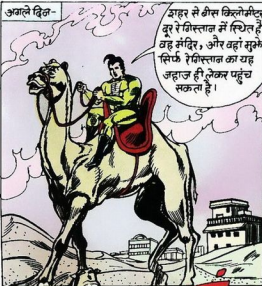
अगले दिन-
शहर से बीस किलोमीटर दूर रेगिस्तान में स्थित है वह मंदिर, और वहां मुझे सिर्फ रेगिस्तान का यह जहाज ही लेकर पहुंच सकता है।
थकान और धूल से भरे लंबे सफर के बाद आखिर नागराज अपनी मंजिल तक पहुंचा-
वह है सामने भैरो मंदिर।
तभी-
वांऽऽ
अरे! ये ऊंट एकाएक रुक कर चीखने क्यों लगा? माजरा क्या है?
नागराज ने जो नीचे झांककर देखा तो माजरा उसकी समझ में आया-
ओह! ऊंट के चारों पैरों को जकड़े रेत से बने हाथ। उफ... क्या है ये?
जादू!
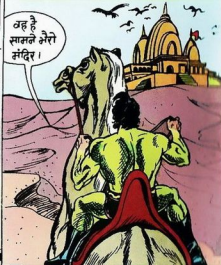
••• जादूगर शाकूरा का जादू ! हा हा हा •••
कड़ाक
हैरानी के सागर में गोते लगाता संभला नागराज-
तुम मेरे पास हर जगह कैसे पहुंच जाते हो ?
अपने जादू के बल पर । ऐसा मैं पहली बार इसलिए नहीं कर सका था क्योंकि तब तुम किसी ऐसी जगह थे जहां पर मेरा जादू नहीं चला था ।
यह नागमणि द्वीप की बात कर रहा है ।
अब मेरा दावा है कि तू शाकूरा के चक्रव्यूह से नहीं बच सकता, क्योंकि यहां तुझे बचाने वाला कोई नहीं है ।
तेरा सपना पूरा नहीं होगा बौने शैतान !
••• क्योंकि मैं तेरे चक्रव्यूह के साथ-साथ तेरी गर्दन तोड़ डालूंगा ।
धाड़
अब नागराज जो आगे बढ़ा तो—
भड़ाक

रेत के बने ये अद्भुत शिकंजे नागराज को जकड़ते चले गए—
ओफ़!
और फिर—
हा हा हा! नागराज फंस गया। फंस गया तू शाकूरा के चक्रव्यूह में। अब मरेगा तू नागराज, अब मरेगा!
अब तू एक भयानक मौत मरेगा। हा हा हा... रेत की बनी यह नुकीली चट्टान तेरे शरीर को रेत में दफन करके रख देगी।
और मैंने इस पर पैराशूट इसलिए बांधा है कि ये तुझ पर धीरे-धीरे गिरेगी...
...ताकि मैं तुझे धीरे-धीरे मरता देखूं। हा हा हा।
40

नागराज की मौत उसके नजदीक और नजदीक होती चली आ रही थी—
है! एक साधन है! मेरी सर्पसेना, जो इस भुरभुरी रेत में सुरंग खोद कर मुझे इस चट्टान रूपी मौत से बचा सकती है।
दूसरे ही क्षण नागराज ने अपने शरीर में वास करते एक-एक सर्प को निकाल बाहर किया—
अब तो ये नुकीली चट्टान मेरे शरीर में हर हाल में धंसेगी।
क्योंकि मैं अपनी पूरी ताकत लगाने के बाद भी अपने बंधनों को नहीं तोड़ पा रहा हूं।
और उससे बचने का अन्य कोई साधन नहीं।
जब तक नुकीली चट्टान अपने लक्ष्य तक पहुंच पाती तब तक सर्प सेना अपना काम कर चुकी थी—
अरे!
चट्टान गिरने से पहले ही नागराज रेत में कहां दफन हो गया?
यह रेत मुझे नहीं...

... तुझे दफन करने के लिए है शाकूरा।
नागराज के उस वार ने शाकूरा को गड्ढे में धकेल दिया—
घड़ाक
तुरन्त ही मौत के भय से शाकूरा का चेहरा काला पड़ गया था—
वह नुकीली चट्टान मुझ पर गिरने वाली है...
... उसे नष्ट करना होगा।
अगले ही पल शाकूरा के हाथ में 'मंत्र-दंड' आ गया—
और नुकीली चट्टान रेत के कणों में बदल गई—
कड़ड़ड़
और फिर गरजता हुआ शाकूरा गड्ढे से बाहर आया—
आज तुझे मरना ही होगा नागराज!
और तुझे मारने का काम करेंगी ये नागफनियां।

जादूगर शाकूरा के बेमिसाल जादू का एक और कमाल थीं वे नागफनियां—
जो तेजी से रबर की तरह बढ़कर...
...नागराज से जा लिपटी थीं—
ओफ़!
पलभर में ही नागराज का शरीर लहू-लुहान हो गया—
लेकिन इतने पर ही बस कहां हुआ—
उफ़! इन नागफनियों का कसाव तेजी से बढ़ता जा रहा है। आऽऽ ह... ये मेरी सांस घोंट देने पर उतारू हैं। इनसे बचने के लिए करूं तो क्या करूं, सर्पसैनिक निकालूं तो वे लंबे-लंबे कांटें वाली इन नागफनियों का भला क्या बिगाड़ पाएंगे!
हा हा हा...
ये तो तेरी शर्तिया मौत है, इससे ना तो तू बच सकता है, और ना ही तुझे कोई बचा सकता है।
नागराज भी यह बात समझ गया था—
अब कुछ नहीं हो सकता!
तभी तो वह भी बचने की आस छोड़ चुका था—
लेकिन उसी पल जो हुआ वह किसी चमत्कार से कम ना था—
न जाने कहां से आकर वह चक्र नागफनी की जड़ों को काटता चला गया—
अब जड़ से जुदा होकर निर्जीव हुई नागफनियों को अपने शरीर से अलग करना नागराज के लिए मुश्किल काम न था—
मेरी मदद करने वाला वह अनोखा चक्र कहां से आया?

नागराज ही नहीं, शाकूरा भी हैरान था—
वह चक्र भेजकर नागराज की मदद किसने की ?
शाकूरा को नागराज ने और कुछ सोचने का मौका नहीं दिया—
तू भी देख, जब नागफनी के लंबे कांटें शरीर में घुसते हैं तो कितना दर्द होता है।
आऽऽह !
असली मजा तो तब आएगा जब ये कांटें तेरे शरीर से खून की धाराएँ बहा देंगे शाकूरा !
अपने लहू-लुहान शरीर को देखकर तो शाकूरा मानो पागल हो गया—
नागराज !
बहुत खेल खेल लिया मैं तुमसे।
अब तेरी खैर नहीं।
ओह ! ये क्या... शाकूरा के दण्ड से छूटी किरणों ने मुझे जड़ कर दिया।

और फिर शाकूरा ने किया अपने जादू का सबसे सशक्त वार—
ये 'अग्नि-वृत्त' तेरे शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर डालेंगे नागराज!
जड़ खड़े नागराज को उन अग्नि-वृत्तों ने घेर लिया—
जो धीरे-धीरे छोटे होते जा रहे थे—
और इसी के साथ बुलंद होता चला जा रहा था शाकूरा के हलक से गूंजने वाला ठहाका—
ज्यों-ज्यों अग्नि-वृत्त छोटे होकर नागराज के पास होते जा रहे थे त्यों-त्यों नागराज का जिस्म पसीने से नहाता जा रहा था—
इस जड़ अवस्था में मैं कुछ नहीं कर सकता। ऐसी हालत में मेरा कोई भी मददगार मेरे शरीर से बाहर नहीं आ सकता, क्योंकि मेरे शरीर के साथ-साथ उनके शरीर भी जड़ हो गए हैं।
नागराज जैसे शख्स ने भी उम्मीद का दामन छोड़ दिया था—
एक पल, सिर्फ एक पल बाद ही मेरा अस्तित्व मिट जाएगा, क्योंकि अब सिर्फ एक पल ही तो लगेंगे इन अग्नि-वृत्तों को मेरे शरीर तक पहुंचने में।
हा हा हा... तेरी सांसें पूरी हो गई हैं नागराज... तेरा इस दुनिया में रहने का समय खत्म हो गया है। हा हा हा।
लेकिन जब चमत्कार होना हो तो वह एक पल के हजारवें हिस्से में भी हो सकता है।
एक पल की दूरी पर थी नागराज की मौत—
और हुआ भी—
'अग्नि-वृत्त' नागराज के शरीर से एक इंच पहले ही ठहर गए—

और तब जब नजर आए उस चमत्कार को करने वाले तो शाकूरा उछल ही पड़ा —
सम्राट खाजूरा! शाकूरा ग्रह के सबसे बलवान जादूगर योद्धाओं के साथ!
हां, शाकूरा! जबसे तुम शाकूरा ग्रह से भागकर आए हो हम तभी से तुम्हें बन्दी बनाने के लिए तुम्हारी तलाश में थे।
परन्तु चूंकि ग्रह से भागकर तुम कहां गए हो, यह जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं था इसलिए हम तुम्हें तलाश ना कर सके।
आज जब हमें तुम्हारे बारे में पता चला तो हम तुम्हें बन्दी बनाने आ पहुंचे!
आज तुम्हें मेरा पता कैसे चला?
मुझसे!
मैंने अपनी तंत्र-शक्तियों की मदद से जब तुम्हारे ग्रह के बारे में जानकर ग्रहसम्राट से मानसिक सम्पर्क बनाया तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें तो शाकूरा की बहुत तलाश थी। तब मैंने सम्राट को तुम्हारी सारी स्थिति से अवगत करा दिया!
और फिर सम्राट अपने योद्धाओं को साथ लेकर मेरे पास आ पहुंचे, और फिर इन्हें मैं लेकर यहां आ पहुंची!
तूने मुझे तबाह कर डाला। मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा।
?
हमारे सामने तुम्हारी जादूगरी स्कदम तुच्छ है शाकूरा!

बन्दी बना लो इसे !
जादूगर योद्धा तुरन्त ही सक्रिय हो उठे तो—
नहीं !
फिर सम्राट खाजूरा ने नागराज को शाकूरा के जादू से मुक्ति दिलाई—
धन्यवाद सम्राट !
पलभर में ही जादूगर शाकूरा उनकी जादुई कैद में पड़ा तड़प रहा था—
हम तुमसे क्षमा-याचना करते हुए तुम्हें यह वचन देते हैं कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा, जादूगर शाकूरा को हम ऐसी भयंकर कैद में डालेंगे कि फिर यह सारा जीवन उससे आजाद नहीं हो पाएगा।
हमारे ग्रह के एक वासी के कारण तुम्हें व तुम्हारे ग्रह-वासियों को कष्ट सहना पड़ा। इसके लिए हमें खेद है।
फिर सम्राट खाजूरा बन्दी शाकूरा को लेकर वापस अपने ग्रह लौट गए—
अच्छा हुआ कि जादूगर शाकूरा नाम का संकट पृथ्वी से सदा के लिए टला !

नागराज कपाल कुंडला की तरफ पलटा–
एक बार मैं फिर तुम्हारा आभार व्यक्त करना चाहूंगा कपाल कुंडला, क्योंकि तुम ना केवल सही समय पर ड्राकूरा के ग्रह वालों को लेकर पहुंची बल्कि तुमने अपना तंत्र चक्र भेजकर नागफनियों से मेरी जान भी बचाई।
किसी और के कार्य का तुम मुझे वैसे ही श्रेय दे रहे हो नागराज, जिस चक्र की तुम बात कर रहे हो उसे मैंने तुम्हारी सहायता को नहीं भेजा।
नागराज बुरी तरह चौंका–
वह 'तंत्र-चक्र' तुम्हारा नहीं तो किसका था?
मैं क्या जानूं? छोड़ो इस बात को! मैं भी वापस चलती हूं!
क्योंकि मुझे अपनी तंत्र-साधना से उठे हुए काफी समय हो गया है।
कपाल कुंडला चली गई नागराज को सवालों की उलझनों में उलझा छोड़कर–
वह तंत्र-चक्र भेजकर किसने मेरी मदद की थी? कौन है वह मेरा मददगार?
नागराज की समझ में कुछ नहीं आया तो वह भैरो मन्दिर की तरफ चल पड़ा–

मन्दिर का अच्छी तरह से निरीक्षण करने के बाद नागराज को एक बार फिर निराशा होना पड़ा—
यह मंदिर भी वह नहीं है, मुझे जिसकी तलाश है।
मुझे एक बार फिर बंबई जाकर मानवी से इस विषय में बात करनी होगी।
इधर द्रुत गति से घूम रही थी, 'लक-व्हील' की सुई—
जादूगर शाकूरा के हार जाने के बाद अब देखें नागराज पर अगला हमला करने वाला भाग्यशाली कौन होता है!
सभी की गिद्ध दृष्टि 'लक-व्हील' पर जमी हुई थी—
और इस बार 'लक-व्हील' ने जिस भाग्यशाली को चुना, वो थी...
मिस किलर!

मिस किलर- जिसके कंठ से निकले ठहाकों ने किले की दरों-दीवारों को हिलाकर रख दिया-
हा हा हा ! नागराज मेरे हाथों मरेगा । इस बार वह मेरी शक्ति का मुकाबला हरगिज़ नहीं कर सकता । हा हा हा !
अपने ऊपर मंडराते इस नए खतरे से बेखबर नागराज, एक बार फिर मानवी के पास बंबई आ पहुंचा-
मुझे खेद है नागराज कि मेरे विस 'क्लू' की वजह से तुम्हें निराश होकर लौटना पड़ा ।
लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा । मुझे आज रात भर का समय और दो, मुझे उम्मीद है इस बार मैं तुम्हें तुम्हारे सपनों के मंदिर में पहुंचाने में जरूर सफल हो जाऊंगी ।
ठीक है, मानवी ! मैं कल एक बार फिर तुमसे मिलूंगा !
अगर तुम चाहो नागराज तो कल तक तुम मेरे मेहमान बनकर रह सकते हो । मेरा छोटा भाई अंतरिक्ष तुमसे मिलकर बहुत खुश होगा !
रुक जाओ न, नागराज अंकल !
बेटे ! पर मैं तुम लोगों को कष्ट देना नहीं चाहता । मेरे लिए किसी होटल में ठहरना ज्यादा मुनासिब होगा ।
फिर वहां से रवाना हुआ नागराज-

जब बंबई के शानदार होटल सन एण्ड सैण्ड में पहुंचा तब तक काफी रात हो चुकी थी—
लंबे सफर और शाकूरा की मुठभेड़ ने बुरी तरह थका दिया है। बिस्तर पर पड़ते ही गहरी नींद आ जाएगी।
चमुच—
कुछ ही पलों बाद ही नागराज गहरी नींद की आगोश में पहुंच गया—
र तब—
चले आओ... चले आओ...
...चले... आओ...
नहीं!
एक झटके से
उठा नागराज पसीने से नहाया हुआ था—

उफ! फिर वही मंदिर! फिर वही आवाजें! ऐसे उलजलूल सपने तो मैं कई बार देख चुका हूं। लेकिन इस बार मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मेरा इन सपनों से संबंध है।
सवाल सैकड़ों थे, लेकिन जवाब एक भी नहीं था—
जवाब की तलाश में नागराज सुबह होते ही मानवी के पास जा पहुंचा—
क्या रहा मानवी?
मैंने तुम्हारे सपनों का मंदिर ढूंढ लिया है।
खुशी के मारे नागराज उछल ही पड़ा—
सच!
हां, नागराज! आओ मैं तुम्हें वहां ले चलती हूं।
हम कहां चल रहे हैं, मानवी?
खंडाला! तुम्हारे सपनों का मंदिर वहीं मौजूद है।
बंबई से एक सौ पचास किलोमीटर दूर स्थित पर्यटकस्थल खंडाला के पहाड़ी क्षेत्र में—
यहां से एक किलो-मीटर तक पैदल का रास्ता है, जिसे तय करके हम उस मंदिर तक पहुंच जाएंगे।
मानवी के साथ आगे बढ़ा नागराज—

कुछ कदम चलने के बाद रुक गया—
और उसके इस तरह रुकने का कारण था—
बमगोला! जिसके बम और गोले के सामने जो भी आया...
...उसके चिथड़े हो गए हजार!
एक तरफ हट जा लड़की, वरना नागराज के साथ तू भी मारी जाएगी।
बड़ाम
बच नागराज! लेकिन मेरे गोले और बम नहीं लेने देंगे दम।
यह सिर्फ मुझ पर अपने घातक बम और गोलों की बारिश किए जा रहा है, जबकि इसने मानवी को एक तरफ हटने के लिए बोल दिया। ऐसा क्योंकर हुआ?
मानवी से उसको क्या हमदर्दी है और वह मुझे ही क्यों मारना चाहता है? यह सब बाद में सोचूंगा। पहले इसका कोई इंतजाम करने की तो सोचूं... वैसे ऐसे ही सर्प छोड़ना और उसके पास जाना तो बेवकूफी होगी। इसीलिए सर्पों की की मदद से कुछ और ही सोचना होगा।
कुछ क्या नागराज ने जल्द ही बहुत कुछ सोच लिया—
इसके बमगोले ही इसकी मुसीबत बन सकते हैं। लेकिन जरूरत है इसके तेज रफ्तार से आते गोलों को अपनी नागरस्सी में फंसाने की ओर...

राज कॉमिक्स
...और उसे उस चट्टान की तरफ उछाल देने की। जिसके ठीक नीचे बमगोला खड़ा है।
तेज आवाज से फटे बम ने चट्टान के परखच्चे उड़ा दिए—
भड़
अब बम और गोले बरसाने वाला बमगोला स्वयं को उस चट्टान के टुकड़ों की बारिश से न बचा सका—
कुछ ही पलों में बमगोला चट्टान के उन टुकड़ों के नीचे दफन होकर रह गया, जिनके नीचे से न तो वह स्वयं निकल सकता था...
...और न ही उसके बमगोले उसे निकाल सकते थे—
कौन था यह बमगोला...और क्यों सिर्फ मेरी ही जान के पीछे पड़ा हुआ था? इसने मानवी को कुछ क्यों नहीं कहा। जबकि मैं और मानवी एक ही राह के राही हैं।
अपने दिमाग में तूफान मचाते सवालों का जवाब मैं बाद में मानवी से पूछूंगा, क्योंकि फिलहाल तो मुझे सपनों के मंदिर को देखने की लालसा आन्दोलित किए हुए है।

नागराज के सपनों का मंदिर—
जिसे देखकर नागराज बच्चों की तरह किलकारी मार बैठा था—
वाऊ! यही है! एकदम यही है मेरे सपनों का मंदिर! इसी मंदिर के अंदर से आती आवाज़ मुझे अपने पास बुलाती थी...
... अब मैं यहां पहुंच गया हूं। अब सारे रहस्य खुल जाएंगे।
आओ मानवी, मंदिर के अन्दर चलें।
मानवी को लगभग खींचता हुआ...
...नागराज उसे लेकर मंदिर के अंदर पहुंचा—
अचानक खुशी से लगभग नाचता नागराज बुरी तरह चिंहुका—
अरे! यह क्या?

... इस मंदिर में से आ रही नई लकड़ी, पेंट और चूने की महक साफ बता रही है कि इस मंदिर को अभी हाल में ही बनाया गया है। शायद एक-दो दिन पहले ही।
पर उस मंदिर का सपना तो पिछले कई दिनों से देखता आ रहा हूं।
यह मेरे सपनों का मंदिर नहीं। तो फिर ये... ये क्या है।?
जाल। यह कोई जाल है।
खट
क्योंकि तभी-
ओह!
दूसरे ही पल नागराज को उसके सवालों का जवाब मिल गया-
बिना एक भी क्षण गंवाए नागराज अपने स्थान से उछल गया-
और ऐसा करके उसने बचा ली अपनी जान-
धम्म
उफ। लोहे के उस भारी गोले के नीचे दबकर मेरी हड्डियों तक का सुरमा बन जाता।

यह सिर्फ जाल नहीं, मौत का जाल है, जिसमें मुझे फंसाया है मानवी ने। उफ्! कितनी खतरनाक निकली यह खूबसूरत बला।
क्रोध से दांत पीसता नागराज मानवी की तरफ बढ़ा—
तुमने मुझसे धोखा किया है मानवी, और ये मैं तुमसे जानकर ही रहूंगा कि तुमने ऐसा क्यों... क्यों किया?
नागराज का अरमान पूरा नहीं हो पाया...
... क्योंकि उससे पहले ही—
न जाने कहां से आकर उस रोशनी ने मानवी को नहला दिया—
और—
ओह! मानवी गायब!
अब इतने बड़े मंदिर में नागराज अकेला रह गया था—
अब मेरा इस मंदिर में एक पल भी ठहरना ठीक नहीं। क्योंकि कभी भी कोई खतरा मेरे ऊपर टूट सकता है।
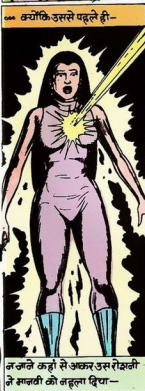
००० मुझे तुरन्त ही यहां से बाहर निकलने की कोशिश करनी०००
००० होगीऽऽऽ
मंदिर के बन्द दरवाज़े की तरफ भागते नागराज के पाँवों से ज़मीन खिसक गई-
और वह जा गिरा उस विशाल जाले पर -
और-
ओह ! इस विशाल जाले पर कौन सा पदार्थ लगा हुआ है, जिसने मुझे बुरी तरह जाले से चिपकाकर रख छोड़ा है। मैं जितना इससे खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा हूं००० उतना ही चिपकता जा रहा हूं।
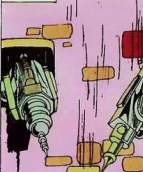
कुछ ही पलों में—
उफ्! अब तो मैं इस जाले से ऐसे चिपक गया हूं कि अपने-आप-को मैं तिलभर भी नहीं हिला सकता...
...लेकिन मुझे इस तरह चिपकाने के पीछे किसी का मकसद क्या है?
जल्द ही नागराज को नजर आया वह 'मकसद'—
उफ्! चारों तरफ दीवारों से लेसर गनें निकल रही हैं। और सभी इस तरह सैट हैं कि उन सबका निशाना सिर्फ मैं हूं।
तभी गूंज उठा वह ठहाका—
हा हा हा। नागराज... अपने इष्ट देवों को याद कर ले, क्योंकि तेरा आखिरी समय आ गया है। ठीक दो मिनट बाद तेरा निशाना लेकर सैट की गई लेसर गनें चलेंगी और उनसे निकली लेसर किरणें तुझे राख में बदल देंगी।
... और हां, बच निकलने का ख्याल अपने दिमाग से निकाल फेंकना क्योंकि जिस गोंद से तुम चिपके हुए हो उससे तुम तभी छूट सकते हो जब तुम्हारे शरीर से तुम्हारी सारी खाल उतार दी जाएगी। हा हा हा।
उफ्! सचमुच मेरे पास बचने का कोई रास्ता नहीं। लेकिन ये कौन है जो मेरी मौत का तमाशा देखने को आतुर है। मुझे इसकी आवाज जानी-पहचानी क्यों लग रही है?
दो मिनट... नागराज से उसकी मौत सिर्फ दो मिनट दूर थी... और दो मिनट गुजरने में देर ही कितनी लगती है...
...सिर्फ दो मिनट-
क्रमशः